RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-01
January -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

प्राचीन बौद्ध काल व समाज

पूरन लाल मीना

सहायक प्रोफेसर दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

कालक्रम का निर्धारण प्रारम्भिक भारतीय इतिहास में हमेशा से एक समस्या रही है।[1] जितने ऐतिहासिक प्रमाण हमारे पास है वे भारत पर सिकन्दर के आक्रमण से पूर्व के इतिहास की कालानुक्रम सटीक जानकारी उपलब्ध नहीं करा पाते है।[2]

सामान्य परंपरा है कि भगवान बुद्ध का जन्म 563 ई. पू.[3] में आधुनिक रूम्मिनदेइ के लुम्बिनी वन में कही पर हुआ था। उनके पिता शुद्वोधन नेपाल की तराई के राजा थे इस राज्य की कपिलवस्तु राजधानी थी, प्रजापति की बहन महामाया बुद्ध की माँ थी, बौद्धों के प्रसिद्ध ग्रन्थ जो कि पाली भाषा में लिखे गये उनमें से एक मज्झिम निकाय में उल्लिखित है कि राजा शुद्धोधन की पत्नी प्रसव कराने अपने पिता के घर जारही थी तभी मार्ग में लुम्बिनी नामक वन में शाल वृक्ष के नीचे गौतम का जन्म हुआ। बौद्धों के पाली ग्रन्थ मज्झिम निकाय में उल्लिखित है कि 7 दिन बाद गौतम की माँ का देहान्त हो गया। उसके बाद गौतम का पालन–पोषण उनकी माँ की बहन प्रजापति ने किया।

एकान्तप्रिय, चिन्तनशील गौतम सिद्धार्थ की शादी सुन्दरी राजकुमारी यशोधरा से उनके पिता शुद्धोधन ने 18 वर्ष की आयु में ही कर दी ताकि गौतम सिद्धार्थ का मन शांत हो जाये। उनके एक पुत्र भी हुआ जिसे ''एक बंधन'' का जन्म की संज्ञा दी गई। संयोगवस कुछ समय पश्चात सिद्धार्थ को तीन दृष्य दिखे–एक वृद्ध, एक रोगी, एक शव इन दृश्यों में उन्हें भविष्य में अपनी भी स्थिति दिखी।[4] अंततः रात्रि काल में पत्नी यशोधरा, पुत्र राहुल को अंतिम सोती अवस्था में छोड–छाड़ महल से अपने घोडे कंथक पर वैठकर निकल पड़े जो इतिहास में ''महाभिनिष्क्रमण'' नाम से प्रसिद्ध है।

बुद्ध की 80 वर्ष की आयु में 483 ई.पू. में कुशीनगर में मृत्यु हो गई।[5] कालक्रम के इन वर्षों पर सामान्यतः विद्वानों में सहमति है कि 400ई.पू. के ही आस–पास या उससे 80 वर्ष इधर–उधर उनकी मृत्यु हो गई[6]बुद्ध की इन तिथियों की गणना की कई विधियों का प्रयोग किया गया है मौर्य शासक अशोक से मिली शिलालेखी की जानकारी को भी इन तिथियों को निकालने में सहायता ली गई है। मौर्य सम्राट अशोक के शिलालेख संख्या 13 में तत्कालीन यूनानी शासकों के नामों काउल्लेख आया है। इनकी सहायता से अशोक के गद्दीनसीन होने की तिथि 268 ई. पू. पर सहमति विद्वानों की बनती है। अशोक का राजतिलक कुछ संघर्षों से जूझने के कारण 265 ई. पू. में अर्थात 3 वर्ष बाद हुआ।[7]

बुद्ध की जितनी भी तिथि दी जाती है उनके अध्ययन को सामान्यतः दीर्घकालानुक्रम, लघुकालानुक्रम में विभक्त किया जाता है जो क्रमशः दक्षिणी किवदंति उत्तरी किवदंति के नाम से जाना जाता है। इनके दक्षिणी किवदंति में शामिल श्रीलंका की किवदंति के अनुसार अशोक को बुद्ध की मृत्यु से 218 वर्ष बाद का माना जाता है[8] इसके विपरीत उत्तरी किवदंति मौर्य शासक अशोक को बुद्ध के महापरिनिर्वाण से 100–110 वर्ष बाद का मानती है।

विद्वान आंद्रे वारो ने 1953 में अपने लेख[9] में लिखा कि बुद्ध की तिथि की गणना दीर्घकालीन कालानुक्रम में की जानी चाहिए। इसके समर्थन में कहा जाता है कि खोतान देश का इतिहास में धर्मकोस के सिहासनारोहण की तिथि 234 ई.पू. दिखाई गई है। जो कि दीर्घकालानुक्रम के 218 ई.पू. से बहुत अधिक भिन्न नहीं है।

दीपवंश में उल्लिखित है कि ''सम्बुद्व अर्थात भगवान बुद्ध की मृत्यु के 218 वर्ष बाद प्रियदर्शी अर्थात पियदस्सन अर्थात अशोक का राज्याभिषेक सम्पन्न हुआ।''[10]

एक मान्यता है कि अशोक ने जिस त्रितीय बौद्ध संगीति का पटना अर्थात पाटलीपुत्र में सम्मेलन किया वह भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण के 236 वर्ष बाद में सम्पन्न हुआ था ये तिथि भी बुद्ध की मृत्यु को अशोक के राजतिलक से 218 वर्ष पूर्व तक इंगित करती है। ऐसा मौर्य सम्राट अशोक के शिलालेख संख्या 13 में कुछ यूनानी शासको के राज्यारोहन

[1]उपिन्दर सिंह, प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, दिल्ली, 2017, पृ. 322
[2]ई.जे. रेपसन, द कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया, वोलम–1, कैंम्ब्रिज, 1922, पृ. 171
[3]वही, पृ. 173
[4]उपिन्दर सिंह, प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, 2017, दिल्ली, पृ. 323
[5]वही, पृ. 323
[6]एच.वेकर्ट (संपादित), 1991, 1992, 1995
[7]ओ.स्टेन, द कोरोनेशन ऑफ चन्द्रगुप्त मौर्य, आर्काईव ओरिएन्टलनी, वोलम–1, 1932 पृ. 368
[8]एन.के. भट्टासली, मौर्यन क्रॉनोलॉजी एंड कनेक्टेड प्रावलमस जनरल ऑफ द रोयल एशियाटिक सोसायटी, पार्ट–2, 1932, पृ. 283
[9]ए.वरेऊ, ''ला डेट दू निरर्वाण, ''जर्नल ऑफ एशियाटिक 1953, वोलम–1, पृ. 241
[10]द्वे सतानि च वस्सानि अटठारस वस्सानि च सम्बुद्वे परिनिब्बुन्ते अभिसित्तो पियदस्सनो, दीपवंश.VI-I

RRIJM 2015, All Rights Reserved

की तिथि की गणना लगभग 268 ई.पू. निकल कर आती है क्योंकि युनानी शासको का तिथिक्रम नाम सहित युनानी इतिहास में मिलना सम्भव है।

प्रसिद्ध इतिहासविद विन्सेट स्मिथ के द्वारा 160ई.पू. से पूर्व के श्रीलंकाई कालानुक्रम को पूरी तरह मानने से इनकार कर दिया और उसे गलत भी ठहराया था। एक अन्य मान्यता देवानम्पियतिस्य तक के कालानुक्रम की मान्यता इस साधारण आधार पर संदेह के घेरे में है कि विजय का श्रीलंका में आगमन तथा बुद्ध की मृत्यु का दिन एक ही है। इन सब के अतिरिक्त शासकों के शासनकालों के वर्षों को संदेहास्पद तरीके से ऐसा दिया गया है कि वे न केवल किसी सर्वमान्य योजना का अंश दिखती है, अपितु दो शासकों पंडुकाभय और मुटसिव, की अवधि प्रत्यक्ष रूप से कठिन प्रतीत होती है।[11]

इनके बावजूद पंडुकाभय 107 वर्ष की उम्र तक जीवित रहा जबकि मुटसिव ने वृद्धावस्था में राजा बनने के बावजूद 60 वर्ष तक शासन किया।

इन सब घटनाओं को सम्बद्ध करने का प्रमाण मज्झिम निकास है, जिसमें बुद्ध ने स्वयं यह बताया है कि अभीष्ट आध्यात्मिक ध्येय की प्राप्ति के लिए धम्म[12] त्रिरत्नों में से एक अर्थात बुद्ध, धम्म, संघ में से एक, एक निमित्त या साधन मात्र है। मज्झिम निकाय में समुद्र को पार करने के लिए एक नाव की उपमा देते हुए इसे व्यक्त किया गया है। मज्झिम निकाय में आगे लिखा है कि एक ध्येय के मिलजाने के बाद प्रयुक्त साधन का कोई उपयोग नहीं रह जाता है। आगे कहा गया है कि ये सब आगे मार्ग में आने वाली भयानक नदी जो पूरे उफान पर हो जिसे पार करना दुश्कर हो से जीवन की कठिनता की तुलना मज्झिम निकाय में की गई है।[13] बुद्ध भगवान को एक क्रांतिकारी के रूप में पालि स्रोतों में उल्लिखित किया है जिसने सामाजिक बुराईयों, भेदभाव अंधविश्वास, जाति व्यवस्था की कठोरता की बेड़ियों को तोडते हुए ईश्वर तक पहुँचने के सर्वसुलभ मार्ग दिये।[14] बावजूद इसके पालि स्रोतों ने पूरी तरह भेदभाव के खिलाफ या सामाजिक असमानता के खिलाफ पूरी तरह बुद्ध को दिखाने के स्थान पर घाल–मेल कर दिखाया गया है। यहां तक की संघों की प्रक्रिया, व्यवस्था, दिनचर्या, में भिक्षुओं के साथ ऊँच–नीच की बात दिखाई गई है, पालि ग्रन्थों के अनुसार सामाजिक बंधन भी दुःख का एक कारण है इन बंधनों के तोड़े बिना दुःख से मुक्ति संभव नहीं है।[15]

बाद के समय में संघीय व्यवस्था समाज से निष्कासित लोगों की शरणस्थली न बन जाय, इसलिए बौद्ध संघ दिखाते रहे कि समाज में यथास्थिति के लिए संघ में कठोरता बरतनी जरूरी थी।

जाति व्यवस्था को बौद्धों के पालि ग्रन्थें में मनुष्य द्वारा बनाया दिखाया गया है वही, ब्राह्मणवादी व्यवस्था में जाति को ईश्वर रचित प्रकृति की व्यवस्था बताकर जारी रखने की बात कही गई है।

बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तरनिकाय ने बुद्ध के स्वप्न की चर्चा करते हुए इसे जाति व्यवस्था की उत्पत्ति की व्याख्या करते हुए बताया है कि चार पंक्षी पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारो दिशाओं से आकर उनके पैरों में विराजमान हो गये, क्योंकि चारो दिशाओं का तापमान अलग–अलग था, यहाँ तक की चारो दिशाओं से आये पंक्षियों की आवाज की धुन भी अलग–अलग थी कलर (रंग) भी भिन्न थे, ऐसे ही जब संघ में कोई आता है तो वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वेश्य, शूद्र के रूप में अपनी पहचान लेकर आता है, परन्तु संघ में लम्बे समय तक रहने के कारण उसे पता चल जाता है कि वह भी एक पंक्षी अर्थात मनुष्य ही है चाहे वो किसी दिशा से आया पंक्षी अर्थात किसी भी जाति–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र से ताल्लुक ही क्यों न रखता हो।

पालीभाषा के बौद्ध ग्रन्थों में उल्लिखित है कि संघ में आने के बाद भिक्षु या साधारण मनुष्य ''वेवन्नियन्ति'' हो जाता है। संघ के लिए जाति अर्थहीन रह जाती है अर्थात् संघ में आने के बाद ''वेवन्नियन्ति'' अथवा वर्णहीन की अवस्था आनी है इससे कोई बच नहीं सकता था। फिर पालि भाषा के बौद्ध ग्रन्थों में कहीं–कहीं जिक्र आता है कि संघ में ऊँची जाति के लोगों को निचली जाति के लोगों की तुलना में बाद के दिनों में प्राथमिकता पर रखा जाता था।[16]

गणसंघ के ऊँची जाति अर्थात क्षत्रिय, ब्राह्मणों की संख्या सर्वाधिक होती थी या कहे संघ के नियम भले सब जाति के लोगों के खुले होतें होंगे पर वास्तविकता कुछ और थी। और निम्नकुल की संख्या निम्न अर्थात कम होने की बात भेदभाव पूर्ण संघ प्रवेश की ओर इशारा करती थी।[17]

सारिपुत्त, महामोग्गलान, महाकस्सप ब्राह्मण वर्ग से आने वाले संघ के भिक्षु थे। आनंद, अनिरूद्ध जो कि क्षत्रिय वर्ग से ताल्लुक रखने वाले भिक्षु थे। निम्न जाति के उपालि[18] का नाम तो उपवाद ही रहा होगा।

यह भी कोशिस संघ में रहती कि क्षत्रिय सबसे प्रथम

[11]महावंश–5, पृ. 280
[12]उपिन्दर सिंह, प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, दिल्ली, 2017, पृ. 325
[13]वही, पृ. 325
[14]उपिन्दर सिंह, प्राचीन, एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, दिल्ली–2017, पृ. 328
[15]वही, पृ. 328
[16]चक्रवर्ती, 1987, पृ. 124
[17]चक्रवर्ती, 1987, पृ. 130
[18]चक्रवर्ती, 1987, पृ. 131

वर्ग का बनाकर रखा जाय, ब्राह्मण उसके बाद द्वितीय श्रेणी का भिक्षु और उसके बाद वैश्य, शूद्र, महिला, भिक्षुओं की श्रेणी होती थी। हमे पाली ग्रंथ से स्पष्टतः पता चलता है कि ब्राह्मण सर्वोच्च नहीं थे न तो संघीय जीवन शैली या प्रवेश के समय और न सामाजिक सोपान के क्रम में। बल्कि क्षत्रिय ही बौद्ध पालि ग्रंथें में सर्वोच्च शिखर पर विराजमान दिखाये गये हैं। बौद्ध पालि ग्रन्थों ने ब्राह्मण शब्द के दो अर्थ दिखाये हैं पहला एक विद्वान जिसका आचरण भी संयमित हो, दूसरा समाज में जाति व्यवस्था के रूप में। कई। कई पालि ग्रन्थें में बुद्ध को ब्राह्मण प्रथम श्रेणी वाला अर्थात जाति से हटकर विद्वान, संयमी के रूप में दिखाया गया है। सोनदण्डसुत्त में स्पष्ट कहा गया है कि ब्राह्मणत्व का जन्म–मरण नहीं होता कोई भी संयमी, विद्वान इसे प्राप्त भी कर सकता है और इससे वंचित भी हो सकता है। पालिग्रंथों ने ब्राह्मणत्व का सम्मान किया और ब्राह्मणों की कड़ी आलोचना भी की है क्योंकि बौद्धधर्म के उदय का मूल कारण सामाजिक जाति बंधन अर्थात ऊँच–नीच की दीवार के कारण ही हुआ था।

RRIJM 2015, All Rights Reserved